माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 5 1 2 परीक्षा का विषय संस्कृत
2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 03-03-09
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
T-1006	D

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

केन्द्र क्रमांक की सील

केन्द्राध्यक्ष
केन्द्र क्रमांक-752006

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

1	9	7	5	2	0	5	5	6

5. नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :—

				दो	शून्य	पाँच	पाँच	छः

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :—

क :— संख्या शब्दों में × अंकों में ×

ख :— परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 11 में है।

ग :— उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न–पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) ________

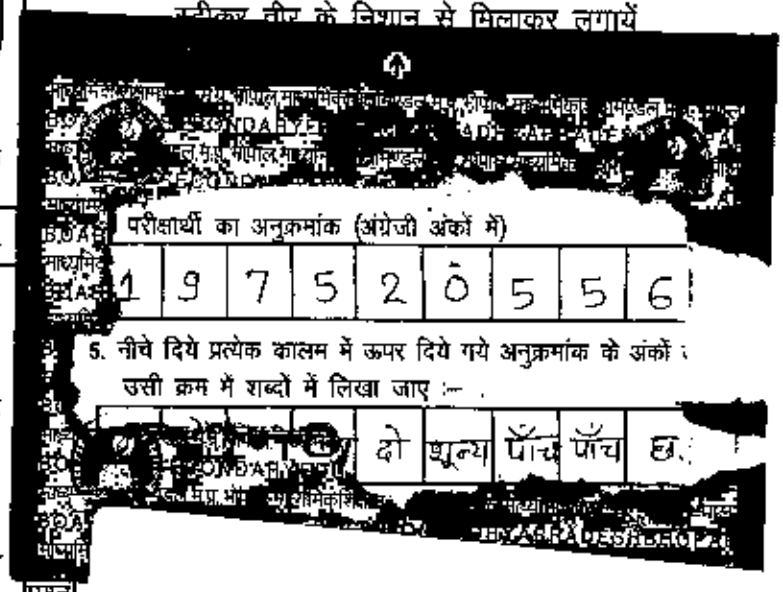

नाम R.K. Chauhan पद Teacher

पता / संस्था S.H.S.S. Bindary

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

प्रश्न	
1	
2	
3	
4	
5	
6	

B S E M P

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्ति
चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन दि
पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक

हस्ताक्षर (परीक्षक) ________ हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक) ________ हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक) ________

परीक्षक क्रमांक 9680075 दिनांक 1/7/3 दिनांक 1/7/3

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3

योग ५५ ६

17

प्रश्न क्रमांक (1) का उत्तर

त्तर ⇒ (ब) अव्ययी भाव समासः।

उत्तर ⇒ (द) पितरौ।

उत्तर ⇒ (स) घन इव श्यामः।

प्रश्न क्रमांक (2) का उत्तर

⇒ (ब) पठितः।

(स) त्व

⇒ (अ) शानच्।

⇒ (द) धार्मिकः।

प्रश्न क्रमांक (3) का उत्तर

उत्तर ⇒ (अ) दुरात्मा।

उत्तर ⇒ (अ) दीर्घ सन्धिः।

उत्तर ⇒ (स) व्यंजन सन्धिः।

उत्तर ⇒ (ब) हरे + अव।

प्रश्न क्रमांक (4) का उत्तर

र ⇒ (स) दैवतम्।

र ⇒ (ब) सन्ताः।

प्रश्न क्रमांक (5) का उत्तर

पृष्ठ के अंकों का योग

⇒ (द) लृट् लकारः।

⇒ (ब) उत्तम पुरुषः।

⇒ (अ) एकवचनम्।

(iv) उत्तर ⇒ (स) लिख

योग पूर्व पृष्ठ

प्रश्न क्रमांक (6) का उत्तर

(i) उत्तर ⇒ (स) प्रति। (अ) यावत्।

उत्तर ⇒ (स) कुत्र।

उत्तर ⇒ (अ) प्र।

उत्तर ⇒ (द) विचल:।

प्रश्न क्रमांक (7) का उत्तर

उत्तर ⇒ न।

उत्तर ⇒ आम्।

उत्तर ⇒ न।

उत्तर ⇒ आम्।

प्रश्न क्रमांक (8) का उत्तर

उत्तर ⇒ विश्वबन्धुत्व।

उत्तर ⇒ त्रहते।

उत्तर ⇒ यश:।

उत्तर ⇒ श्रेष्ठ:।

प्रश्न क्रमांक (9) का उत्तर

(1) गुणा: कुर्वन्ति दूतत्वं, दूरेऽपि वसतां सताम्।
केतकीगन्धमाघ्राय स्वयमायान्ति षट्पदा: ॥1॥

माशास्त्रं करे यस्य, दुर्जन: किं करिष्यति।
अतृणे पतितो वह्नि:, स्वयमेवोपशाम्यति ॥2॥

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 5 के अंक कुल अं.

प्रश्न क्रमांक (10) का उत्तर

"अ" उत्तर

(i) वेदव्यास: - (3) महाभारतम्।

ii) वाग्भूषणम् - (4) भूषणम्।

iii) मधुरताम् - (1) इक्षु:।

iv) स्वर्णयुगस्य - (2) गुप्तकालस्य।

प्रश्न क्रमांक (11) का उत्तर

(i) उत्तर ⇒ वृक्षा:।

उत्तर ⇒ वाग्भूषणम्।

उत्तर ⇒ नृत्यम्।

उत्तर ⇒ कालगणनाक्षेत्रे।

B
S
E
M
P

प्रश्न क्रमांक (12) का उत्तर

उत्तर⇒ वृक्षाणां छेदनं महत् पापम् अस्ति।

उत्तर⇒ संस्कृतभाषा विश्वबंधुत्वस्य पोषणं करोति

उत्तर⇒ अतृणे पतितो वह्नि: स्वयम् उपशाम्यति

प्रश्न क्रमांक (13) [अ] का उत्तर

उत्तर⇒ मूलशङ्कर: देशाद्देशान्तरं विचरन् व्याकरण-वेदान्तादीनि शास्त्राणि अशिक्षत्।

⇒ अयं स्वामिपूर्णानन्दसरस्वतीसकाशात् संन्यासमगृह्णात्।

पृष्ठ के अंकों का योग

(ii. उत्तर⇒ तदा एष: 'दयानन्दसरस्वती' इति नाम्ना प्रसिद्ध: जात:।

P.t.o.

6

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 6 के अंक कुल अंक

v) उत्तर ⇒ प्रज्ञाचक्षुःस्वामी विरजानन्दः आसीत् ।

) उत्तर ⇒ अनन्तरं मथुरां गत्वा सः बहुविधानि शास्त्राणि अशिक्षत ।

प्रश्न क्रमांक (13) [ब] का उत्तर

र ⇒ सूर्यवंशस्य राजा सगरः आसीत् ।

र ⇒ सः एकदा अश्वमेधयागं कृतवान् ।

तर ⇒ यागस्य अश्वः यत्र तत्र सञ्चारं कृतवान् ।

तर ⇒ इन्द्रः यागस्य विघ्नं कर्तुं मार्गं चिन्तितवान् ।

उत्तर ⇒ इन्द्रः अश्वं गृहीत्वा पाताललोके कपिलमुनेः पुरतः स्थापितवान् ।

B S E M P

प्रश्न क्रमांक (14) [अ] का उत्तर

र ⇒ रविः सत्येन तपते ।

र ⇒ पृथ्वी सत्येन धार्यते ।

तर ⇒ वायुः सत्येन वाति ।

तर ⇒ सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ।

तर ⇒ "धृ" धातुः अस्ति ।

प्रश्न क्रमांक (14) [स] का उत्तर

(i) गङ्गा पापं हन्ति ।

(ii) शशी तापं हन्ति ।

(iii) कल्पतरुः दैन्यं हन्ति ।

(iv) पापं, तापं दैन्यं च सन्तमहाशयाः हनन्ति ।

7

योग पूर्व पृष्ठ	पृष्ठ 7 के अंक	कुल अंक

(v) उत्तर ⇒ "पुरुषम्" |

प्रश्न क्रमांक (15) का उत्तर

राम - षष्ठी विभक्ति:

रामस्य , रामयो: , रामानाम् |

(ii) पितृ - तृतीया विभक्ति: |

उत्तर ⇒ पित्रा , पितृभ्याम् , ~~पितृभ्य~~ पितृभि: |

युष्मद् - प्रथमा विभक्ति: |

त्वम् , युवाम् , यूयम् |

(iv) माला - द्वितीया विभक्ति: |

उत्तर ⇒ मालाम् , माले , माला: |

प्रश्न क्रमांक (17) का उत्तर

(i) उत्तर ⇒ जन्मभूमि: स्वर्गात् गरीयसी |

(ii) उत्तर ⇒ 'मातृभूमि:' इति वैदिक: ऋषि: कथयति |

(iii) उत्तर ⇒ ~~सा~~ जन्मभूमि: स्वर्गात् गरीयसी | एतस्या: स्थानं स्वर्गात् अपि उच्च: अस्ति | सा लोकोपकाय फलं , फूलं , जडमूलं च ददाति | वयं तस्या: रक्षणं करणीया | वयं परस्परैक्य भावनां , स्वार्थं परित्यज्य च देशस्य देशवासिनां च सेवा करणीया |

(iv) उत्तर ⇒ 'स्वर्गात्' शब्दे "पञ्चमीविभक्ति:" अस्ति |

(v) उत्तर ⇒ शीर्षकम् = "जन्मभूमि:" / "मातृभूमि:" |

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न क्रमांक (18) का उत्तर

श्रीमन्तः प्राचार्यमहोदयाः,
शास. उत्कृष्ट - उच्चतर - माध्यमिकविद्यालयः,
डिण्डौरीनगरम्, मध्यप्रदेशः।

विषयः ⇒ अवकाशार्थं प्रार्थना - पत्रम्।

श्रीमन्तः,

सेवायां सविनयं निवेदनम् इदं यद् अस्य अहम् अकस्माद् ज्वरपीडितः अस्मि। अतएव विद्यालयं आगन्तुं सर्वथा असमर्थः अस्मि। कृपया पञ्चदिवसानां पञ्चदिङ्कांकतः नवदिङ्कांक पर्यन्तम् अवकाशं स्वीकुर्वन्तु।

भवदीयः शिष्यः

स्थानः - डिण्डौरीनगरम्। नाम - नितिनः ताण्डेकरः
दिङ्कांकः - 05/03/09 कक्षा - दशमी।

प्रश्न क्रमांक (19) का उत्तर

(i) उत्तर ⇒ एषः बालः अस्ति।
उत्तर ⇒ सीता रामेण सह वनं गता।
उत्तर ⇒ रामाय नमः।
उत्तर ⇒ त्वं पठसि।
उत्तर ⇒ सः मोदकं खादति।

प्रश्न क्रमांक (20) का उत्तर

1. (iv) 'बुन्देलकेसरी' इति विख्यातस्य छत्रसालस्य जन्म 1649 तमे ईस्वीये अभवत्।

2. (v) अयं वीरः बाल्यकालादेव भारतमातरं मुगल-शासनात् विमोक्तुं प्रयतते स्म।

BSEMP

2 (ii) यथासमये एतदर्थम् एव छत्रसाल: शिववीर महाराज
अपि मिलितवान् ।
तस्मै शिवराजवीरोऽपि सर्वविधं साहाय्यं कर्तुं
वचनं अयच्छत् ।

5. (iii) तथा च स्वतन्त्रतायै योद्धुं स्वाशीर्वादस्वरूपं
'भवानीति' नामकं कृपाणम् अपि दत्तवान् ।

प्रश्न क्रमांक (16) का उत्तर

(i) "महाकवि: कालिदास:"

(1) कविकुलशिरोमणि: महाकवि: कालिदास: संस्कृतभाषा
श्रेष्ठतम: कवि: आसीत् ।

(2) स: नाटककार:, महाकाव्यप्रणेता, गीतिकाव्यकर्ता
(खण्डकाव्यकर्ता) च आसीत् ।

(3) तस्य प्रमुखा: ग्रन्था: सन्ति । यथा-

(अ) त्रीणिनाटकानि - मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्
अभिज्ञानशाकुन्तलम् च ।

(ब) महाकाव्यद्वयम् - रघुवंशम्, कुमारसंभवम् च ।

(स) खण्डकाव्यद्वयम् - मेघदूतम्, ऋतुसंहारम् च ।

(4) कालिदासस्य लोकप्रियताया: कारणं तस्य प्रसादगुण
युक्ता ललिता शैली अस्ति ।

(5) कालिदासस्य प्रकृतिचित्रणं अतीव रम्यम् अस्ति ।

(6) चरित्रचित्रणे कालिदास: अतीव पटु: अस्ति ।

(7) वैदेशिका: विद्वांसोऽपि तस्य ग्रन्थान् पठित्वा
आनन्दम् अनुभूयन्ते ।

(8) महाकवि: कालिदास: महाराजविक्रमादित्यस्य सभाकवि

P.T.O.

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

आसीत्।

(9) अनुमीयते यत् तस्य जन्मभूमिः उज्जयिनी आसीत्।

(10) मेघदूते उज्जयिन्याः भव्यं वर्णनं विद्यते।

(11) कालिदासस्य कृतिषु कृत्रिमतायाः अभावः वर्तते।

(12) कालिदासस्य साहित्ये काव्यसौन्दर्यं, रसनिरूपणं च सर्वत्र दृश्यते।

(13) तस्य सूक्तयः सुधासिक्ताः चेतोहरः च सन्ति।

(14) कालिदासस्य उपमा प्रयोगः अपूर्वः अस्ति। साधूच्यते- 'उपमा कालिदासस्य'

(15) वस्तुतः कालिदासः भारतभूमेः गौरवम् अस्ति। अतएव सत्यं उक्तम्-

"पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे,
कनिष्ठिकाधिष्ठितः कालिदासः।"

:X:

SEMP

पृष्ठ 11 के अंक

कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 12 के अंक	=	कुल अंक

मध्यप्रदेश

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 13 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(14)

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 14 के अंक	=	कुल अंक

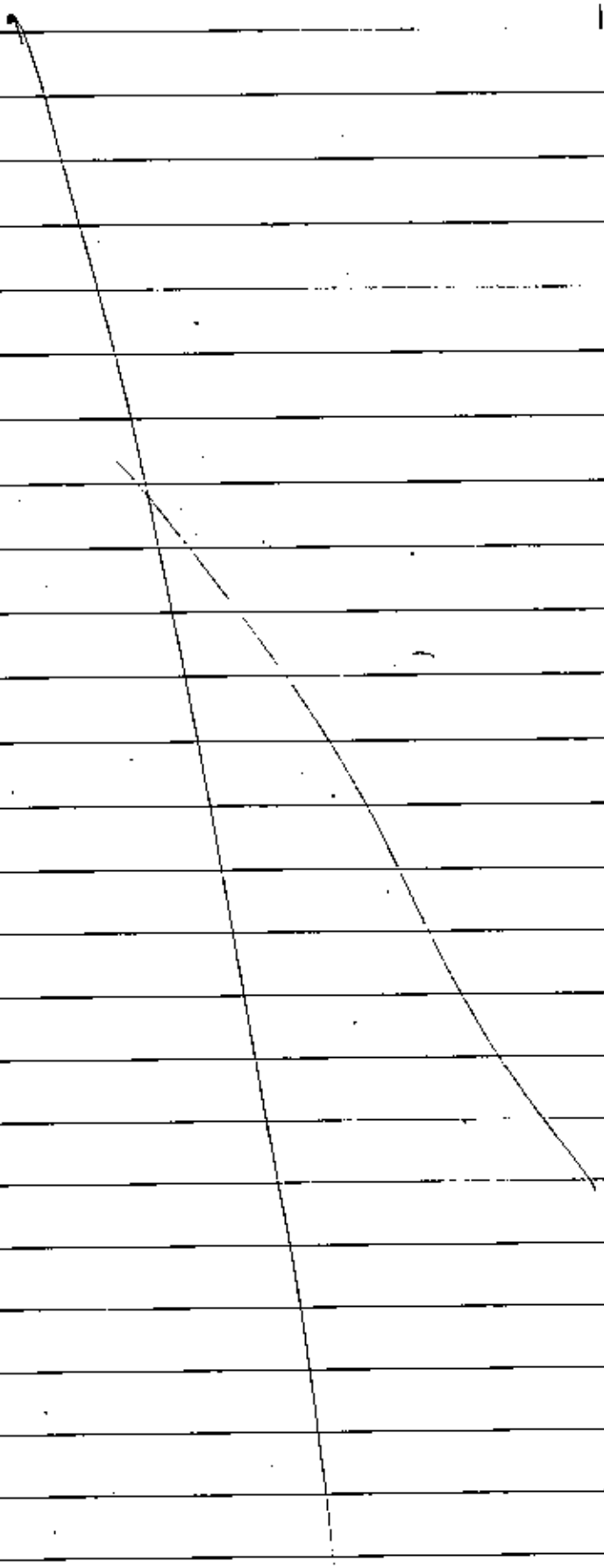

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 15 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 16 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 17 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 18 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 19 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 20 के अंक = कुल अंक

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 21 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 22 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 24 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग